eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

युवाओं की राजनीतिक चेतना को आकार देने में सोशल मीडिया की भूमिका भारतीय लोकतंत्र का एक दशकीय विश्लेषण

रिचा शाही[1]
[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग प्रो .राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय प्रयागराज उ0प्र0

Received: 20 Jan 2026, Accepted: 25 Jan 2026, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2026

Abstract

इक्कीसवीं सदी में भारतीय समाज के समक्ष उपस्थित चुनौतियों के राजनीतिक विश्लेषण के संदर्भ में, यह शोध पत्र सोशल मीडिया के माध्यम से युवाओं की राजनीतिक चेतना के विकास का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। पिछले दशक (2014—2024) में भारतीय लोकतंत्र में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप और यूट्यूब ने युवा राजनीतिक भागीदारी को मौलिक रूप से परिवर्तित किया है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि डिजिटल क्रांति ने किस प्रकार 18—35 आयु वर्ग के युवाओं की राजनीतिक सोच, मतदान व्यवहार और सामाजिक—राजनीतिक मुद्दों पर दृष्टिकोण को प्रभावित किया है। मिश्रित शोध पद्धति का उपयोग करते हुए, प्राथमिक आंकड़े सर्वेक्षण और फोकस ग्रुप डिस्कशन के माध्यम से एकत्रित किए गए, जबकि द्वितीयक आंकड़े चुनाव आयोग के आंकड़ों और सोशल मीडिया एनालिटिक्स से प्राप्त किए गए। शोध के मुख्य निष्कर्ष दर्शाते हैं कि सोशल मीडिया ने युवाओं में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाई है, परंतु साथ ही फेक न्यूज, पोलराइजेशन और इको चौंबर इफेक्ट जैसी समस्याओं को भी जन्म दिया है। विशेष रूप से, 2019 और 2024 के लोकसभा चुनावों में युवा मतदाताओं का व्यवहार सोशल मीडिया अभियानों से गहरे तक प्रभावित रहा। शोध यह भी स्थापित करता है कि सोशल मीडिया ने पारंपरिक राजनीतिक संस्थानों और मीडिया की विश्वसनीयता को चुनौती दी है, जिससे युवाओं में वैकल्पिक सूचना स्रोतों पर निर्भरता बढ़ी है। अध्ययन के परिणाम सुझाते हैं कि भारतीय लोकतंत्र को डिजिटल साक्षरता में वृद्धि, मीडिया रिटेरेसी कार्यक्रमों का विस्तार, और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के लिए उचित नियामक ढांचे की आवश्यकता है। शोध का निष्कर्ष यह है कि जबकि सोशल मीडिया ने युवाओं को राजनीतिक प्रक्रिया में अधिक सक्रिय भागीदार बनाया है, इसके नकारात्मक प्रभावों को संतुलित करने के लिए समग्र नीतिगत दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

यह शोध भारतीय समाज की 21वीं सदी की चुनौतियों के संदर्भ में डिजिटल लोकतंत्र की भविष्य की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

मुख्य शब्द— सोशल मीडिया, युवा राजनीतिक चेतना, भारतीय लोकतंत्र, डिजिटल राजनीति, मीडिया प्रभाव, राजनीतिक भागीदारी।

Introduction

21वी सदी के आरंभिक वर्षों में सोशल मीडिया (विशेषकर इन्टरनेट प्रसार) के आगमन के साथ ही राजनीतिक विस्तार का रूप ही बदल गया है। अब राजनीति मात्र सामाजिक परिवेश तक ही सीमित नहीं रह गया है बल्कि स्मार्टफोन और इन्टरनेट के माध्यम से इसने सूचना प्राप्ति मे एक नयी क्रांति ला दिया है। परंपरागत राजनीतिक दौर में राजनीति अखबारों, पत्र—पत्रिकाओं, लेखों, रेडियो, टेलीविजन एवं सार्वजनिक मंच द्वारा हुआ करता था जिसमें अधिकांशतः वरिष्ठ एवं बुजुर्ग लोगों का ही राजनीतिक

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

क्रिया–कलापों में भागीदारी होती थी। लेकिन सोशल मीडिया के आगमन ने राजनीति को और ज्यादा विस्तार देने और युवाओं के चेतना को बढ़ाने व उनमें रूचि पैदा किया है। विशेषरूप से 18–35 वर्ष के उम्र के युवा वर्ग की भागीदारी बढ़ी है। अब राजनीति फेसबूक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, व व्हाट्सप्प जैसे ऑनलाइन मंचों से होने लगी है। युवा बदलते भारतीय परिदृश्य में हो रहे घटनाक्रम यथा– भ्रष्टाचार, छेड़खानी, राजनीतिक गुटबंदी, जोड़तोड़ की राजनीति ,राजनीतिक दलों का एक दूसरे पर अपशब्दों का प्रयोग जैसी बातों को पढ़कर, देखकर, सोच–समझकर अपनी प्रतिक्रिया दे रहा हैं।

लोकनाथ (2017)– ने "एक लेख में कहा गया कि नैतिक मूल्यों के विकास और भारतीय संस्कृति की महत्ता का एहसास कराने मे सोशल मीडिया की भूमिका अहम हो सकती हैं। लेकिन सोशल मीडिया के उपयोगकर्ताओं को जागरूक रहना होगा किसी के सम्मान को ठेस पहुँचाना खबरों के साथ छेड़छाड़ किसी की निजता में हस्तक्षेप सनसनी फैलाना नैतिक आचरण के खिलाफ है। नैतिक आचरण ही मानव जीवन को उसके जीवन की सार्थकता का बोध कराता है।"

लोकतंत्र का तात्पर्य है– जनभागीदारी। इस जनभागीदारी का विस्तार रूप नागरिक मत के रूप में होता है। 21वी सदी का युवा वर्ग सबसे प्रगतिशील व परिवर्तनशील रूप में देखा जा रहा है इसका विशेष कारण उसका सोशल मीडिया से अधिकाधिक जुड़ाव व उसका प्रयोग करने से है। 2014–2024 के बीच में युवा वर्ग की मतदान में भागीदारी अत्याधिक देखी गयी है। अभी हालिया मोबाइल कॉग्रेस 2025 के 9वें संस्करण में यह खुलासा हुआ है कि भारत में एक कप चाय से भी सस्ती 1 GB डेटा की कीमत है। आप इस डेटा से भी निष्कर्ष निकाल सकते है कि वर्ष 2014 के बाद से मोबाइल फोन निर्माण में 28 गुना की वृद्धि हुयी है। जिसने भारत में इलेक्ट्रॉनिक उत्पादन में 6 गुना वृद्धि पाया गया है। इस डेटा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इससे सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म्स का भी अत्यधिक प्रयोग होगा। जिसके अपने नकारात्मक और सकारात्मक दोनों प्रकार के परिणाम होंगे।

2014–2024 के बीच में विभिन्न प्रकार के ऑनलाइन प्लैटफॉर्म्स व्हाट्सप्प ग्रुप, ट्विटर, यूट्यूब और इंस्टाग्राम का प्रयोग राजनीतिक दल मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए कर रहे हैं विशेष रूप से युवा वर्ग को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए तरह–तरह के चुनावी हथकंडों का प्रयोग कर रहे हैं।

अतः इस शोध से यह जानने में सफलता मिलेगी कि सोशल मीडिया ने युवाओं की भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक भागीदारी और राजनीतिक दृष्टि से उनके मानसिक चेतना को किस प्रकार से प्रभावित करने का काम किया है।

शोध उद्देश्य – शोध का प्रमुख उद्देश्य यह बताने की कोशिश करेगा कि बढ़ते सोशल मीडिया के प्रयोग ने भारत जैसे बड़े लोकतान्त्रिक देश में युवा वर्ग के राजनीतिक, सामाजिक, व बौद्धिक चेतना को किस प्रकार से प्रभावित करने का काम किया है।

शोध प्राविधि – मिश्रित शोध पद्धति का उपयोग करते हुए, प्राथमिक आंकड़े सर्वेक्षण और फोकस ग्रुप डिस्कशन के माध्यम से एकत्रित किए गए, जबकि द्वितीयक आंकड़े चुनाव आयोग के आंकड़ों और सोशल मीडिया एनालिटिक्स से प्राप्त किए गए।

मीडिया की प्रमुख भागीदारी– सोशल मीडिया की भागीदारी हम निम्न बिंदुओं से देख सकते हैं।

1) आनलाइन माध्यम ने सूचना के त्वरित विस्तार में योगदान दिया है।

2) युवा वर्ग की नागरिक व राजनीतिक जिम्मेदारी में योगदान दिया है।

3) सोशल मीडिया ने राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि वैश्विक राजनीतिक हलचलों में भी योगदान दिया है।

4) इन सबके साथ इसने फेकन्यूज ,हिंसा, तोडफोड़, अफवाहों व निजी डेटा दुरुपयोग में भी योगदान दिया है।

युवा वर्ग पर मीडिया का प्रभाव – एक राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में मीना राठौर (2003) ने "भारत में राजनीतिक दल" में बताया है कि राजनीतिक दल दीर्घकालीन समर्थन जुटाने के नीतिपरक प्रयासों के बजाय तात्कालिक निर्वाचक लक्ष्यों की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील रहने लगे हैं। अध्ययन में भारत में दलीय व्यवस्था के स्वरूप का सटीक सर्वेक्षण हैं तथा भारत में दलीय समर्थन के आधारों के वर्तमान एवं सम्भावनाओं का तलस्पर्शी आकलन है।

राजनीति का नाम आते ही मानव मस्तिष्क में षडयंत्र, कुटिलता, धूर्ततापूर्ण विचार, चालबाजी और धोखेबाजी ही आता है। लेकिन वास्तविक अर्थ में इसका पर्याय देश की राज्य व्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के बीच एक ब्रिज का काम करना होता है। जब इस व्यवस्था से युवा वर्ग का जुड़ाव होता है तो इससे देश को बढ़ती युवा क्षमता का देश की राजनीति में एक अलग ही नेतृत्व व बल मिलता है जो देश के युगांतकारी प्रगति में सहायक होता है। अगर किसी राष्ट्र का प्रगतिशील और गुणात्मक परिवर्तन चाहिए तो एक सशक्त युवा वर्ग का राजनीति मे प्रवेश आवश्यक हो जाता है। क्योंकि इनमें नवनिर्माण, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, नागरिक भागीदारी, समाज में व्याप्त कुप्रथाओं व अन्धविश्वास के खिलाफ खुलकर आवाज उठाने की पर्याप्त क्षमता है। सोशल मीडिया के प्रयोग से इसका दायरा बहुत ज्यादा ही बढ़ गया है। युवा सोशल मीडिया के साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिता रहा है। जिससे यह वर्ग राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में हो रहे घटनाक्रम से भी अवगत हैं। जैसे– CAA, अन्ना हजारे आंदोलन, कृषि संशोधन बिल आंदोलन, तीन तलाक मुद्दा, समान नागरिक संहिता विधेयक में युवा वर्ग की भागीदारी इसके साथ–साथ वैश्विक स्तर पर बांग्लादेश और नेपाल में हो रहे राजनीतिक घटनाओं व सत्ता परिवर्तन में युवा वर्ग की अधिक से अधिक इन आन्दोलनों में भागीदारी सोशल मीडिया के प्रयोग ने ही एकजुट करने का काम किया है। इसी प्रकार से सोशल मीडिया ने एशियाई देशों, अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी देशों में तानाशाही व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाने में युवा वर्ग को एकजुट करने का काम किया और लोकतांत्रिक व्यवस्था की बहाली में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सोशल मीडिया ने देश के कोने–कोने से युवाओं को आकर्षित किया है जिसने राजनीतिक व्यवस्था में एक क्रांति ला दी है।

मुंगेर एट अल(2022) "ने पाया कि ट्विटर पर जानकारी का प्रसार राजनीतिक ज्ञान में वृद्धि से जुड़ा है, लेकिन यह मतदाताओं को पक्षपातपूर्ण पूर्वाग्रहों के प्रति भी उजागर करता है जो महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में उनकी समझ को विकृत करते हैं। यह हेर–फेर ऐसे पूर्वाग्रहों के दीर्घकालिक प्रभावों और विभिन्न राजनीतिक संदर्भों और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर समान गतिशीलता कैसे काम करती है, इसकी और अधिक जाँच की आवश्यकता को रेखांकित करता है।"

मीडिया के सकारात्मक प्रभाव– जैसा की मीडिया को लोकतन्त्र का चतुर्थ स्तंभ माना जाता है। सोशल मीडिया ने युवा वर्ग के वैयक्तिक विकास की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राजनीति के विकास में सूचना क्रांति व पारस्परिकता को बढ़ावा देने में सोशल मीडिया ने योगदान दिया है। सोशल मीडिया के माध्यम से ही युवा वर्ग की राजनीतिक रुचि, स्वयं के अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है और साथ ही

सरकार में बैठे लोगों तक अपनी बात पहुंचाने का एक सहज माध्यम भी बना है। सोशल मीडिया के द्वारा ही युवा वर्ग तक अपनी बात पहुंचाने के लिये ही आजकल विभिन्न राजनीतिक दलों ने ऑनलाइन पोर्टल बना रखा है जिसमें निःशुल्क या नाममात्र का शुल्क देकर युवाओं को अपनी दल के प्रति आकर्षित करने का काम किया है साथ ही युवाओं को भी अपनी राजनीतिक भागीदारी और सहभागिता बढ़ाने में मदद मिली है। इसके साथ ही यह भी विश्लेषित करना जरूरी है कि जिस प्रकार से वर्तमान परिदृश्य मे युवा सोशल मीडिया का प्रयोग कर रहा है भविष्य मे उसके मानसिक चेतना पर सोशल मीडिया राजनीति के प्रति किस प्रकार से उसके राजनीतिक व्यवहार और राजनीति के प्रति बढ़ते रुझान को प्रभावित करने का काम करेगा। सोशल मीडिया मात्र एक मनोरंजन का ही साधन नहीं है बल्कि यह युवा वर्ग के लिए एक राजनीतिक चर्चा का मंच प्रदान के साथ उसके आंतरिक विकास मे भी सहायक है जिससे राजनीति के विषय का सूक्ष्म ज्ञान आसानी से प्राप्त कर सके क्योंकि सोशल मीडिया के माध्यम से युवा को जोड़ना बहुत ही सरल है। यूट्यूब ,फेसबुक ,इंस्टाग्राम ,ट्विटर इन सभी माध्यमों से एक प्रकार के राजनीतिक विचार और पार्टी मे रुचि रखने वाले युवा वर्ग को जोड़ने का एक सरल माध्यम बना है जिससे उनकी राजनीतिक अभिव्यक्ति मे वृद्धि होगी और कोई ऐसा मंच या साधन नहीं है जिससे राजनेता कम– समय मे अधिक से अधिक युवा वर्ग को अपनी वाक्पटुता से अपनी पार्टी कि विचारधारा के प्रति आकर्षित कर सके। इस शोध के माध्यम से ही युवाओ के राजनीतिक व्यवहार मे हो रहे परिवर्तनशीलता को भी समझने मे मदद मिलेगी।

मीडिया के नकारात्मक प्रभाव – कहते है न जहाँ सकारात्मक का समावेश होता है वहाँ नकारात्मक पहलू भी अवश्य ही जुड़ा होता है। सोशल मीडिया की लत ने युवाओ के मानसिक विक्षिप्ती को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है उन्हें उत्तेजित कर हिंसा, तोड़फोड़, नारेबाजी, देश विरोधी भाषण देने, सार्वजनिक वस्तुओ की क्षति करने, एक दुसरे के प्रति क्लेष व् घृणा को बढ़ावा दिया है। सोशल मीडिया पर राजनेताओ द्वारा युवा वर्ग को उत्तेजित और अपनी ओर आकर्षित करने हेतु सांप्रदायिक भाषणों का प्रयोग किया जा रहा है जिससे युवा वर्ग के बौद्धिक चेतना को प्रभावित करने का काम किया जा रहा है।

बचाव –

1. अगर समाज में कोई वस्तु अपना नकारात्मक प्रभाव छोड़ रहा है तो उस समस्या के समाधान का भी तरीका है। सोशल मीडिया पर सरकार को अपना नियन्त्रण स्थापित करना पड़ेगा। दुष्प्रचार पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाना चाहिए इसका उलंघन करने वाला चाहे कोई आम जनता हो या सरकार में बैठा कोई सदस्य ही क्यों न हो कठोर सजा का प्रावधान होना चाहिये।
2. सरकार सोशल मीडिया के लिए एक पैमाना तय करे साथ ही इन नियमो का पालन कंपनियों से भी कडाई से करवाई जाये।
3. अनुपयुक्त डेटा शेयरिंग पर प्रर्तिबंध लगाना चाहिए।
4. फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और साथ ही अन्य भी सोशल मीडिया साधनों पर अवांछित फोटो शेयरिंग पर रोक लगानी चाहिए।
5. व्यक्ति के व्यक्तिगत अधिकार व् उसके निजता के अधिकार से सम्बंधित बने कानूनों पर सुप्रीम कोर्ट को भी विशेष ध्यान देने की जरुरत है।

निष्कर्ष– भारत जैसे बड़े लोकतान्त्रिक देश में सोशल मीडिया ने आम जनमानस के मानसिक चेतना को अत्यंत ही प्रभावित करने का काम किया है। सोशल मीडिया ने युवाओ को अपनी बात सरकार तक पहुचाने

में एक सरल माध्यम प्रदान किया है। जिससे भविष्य में राजनीति में युवाओ की भागीदारी बढ़ी है, क्योकि युवा वर्ग में ही देश को एक गुणात्मक प्रगति देने और बदलाव लाने की क्षमता होती है। सोशल मीडिया ने देश के कोने–कोने से युवा वर्ग के विचारों को एकमत करने व् उनको जोड़ने का काम किया है जिससे उनका राजनीतिक रुझान भी बढ़ा है और सरकार को समय–समय पर अपनी जिम्मेदारियों का एहसास कराने में और अपना विरोध प्रकट करने का भी अवसर प्राप्त हुआ है। इसका प्रभाव यह हुआ है की सरकार अपनी नीतियों को बनाने में युवा वर्ग को ध्यान में रख कर रही है क्योकि बढ़ते सोशल मीडिया के प्रयोग से वह युवा वर्ग की प्रतिक्रिया से भी सचेत है। एक तरफ जहा युवा देश के नवनिर्माण करक क्र रूप में देखा जाता है वही दूसरी तरफ उनमे नयी–नयी तकनीकियो को आसानी से समझने की क्षमता होती है जिसका प्रयोग कर प्रत्येक व्यक्ति की राजनीति में पहुँच आसानी से हो सकती है जो भारत जैसे बड़े लोकतान्त्रिक देश में एक स्वस्थ जनमत के निर्माण में अपना योगदान दे सकता है। सरकार को भी इस बढती युवा वर्ग के बौद्धिक चेतना का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाना चाहिये साथ ही सोशल मीडिया के कन्टेंट पर नजर रखने की जरूरत है। जो युवा वर्ग को सही मुद्दे से भटकाकर उन्हें बिना वजह उत्तेजित कर भड़काने का काम ना कर पाए क्योंकि सोशल मीडिया एक राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि एक वैश्विक क्रांति है। युवाओ का राजनीति में अधिक से अधिक समावेश हो लेकिन साथ साथ सतर्कता भी जरुरी है। वर्तमान परिदृश्य मे जिस प्रकार से सोशल मीडिया का प्रयोग बढ़ रहा है उसकी गति को नियंत्रित कर पाना अपने आप मे चुनौतिपूर्ण कार्य है और साथ ही इस बढ़ते प्रयोग को रोकना मतलब आधुनिक ज्ञान से युवा वर्ग को जागरूक करने मे बाधा पहुचाएगा

सोशल मीडिया विशेषज्ञ पवन दुग्गल का कहना है कि– भारत मे सोशल मीडिया का उपयोग समाज से जुड़े हर वर्ग के लोग कर रहे है उनमे से अधिकांश लोग ऐसे स्मार्टफोन धारक है जो इसकी संवेदनशीलता से अनजान है और सिर्फ दूसरों कि देखा देखी फेसबूक और ट्विटर पर सक्रिय है सरकार को चाहिए की इस बढ़ती लोकप्रियता के समानांतर उन कानूनी उपायों के प्रति विचार जरूर करे जिनका इस्तेमाल विचारों के इस सैलाब को बेकाबू होने से रोकने मे प्रयोग किया जा सके।

सन्दर्भ सूची–

1. कुमार, बलेन्द्र और डॉ कुमार ,अरविंद, भारतीय राजनीति में युवाओं का योगदान, IJPGV, हापुड़, 2022, 4(2); 155–161

2. गुप्ता, राजेश, भारतीय राजनीति में युवा वर्ग की भूमिका, श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, (अलवर) राजस्थान, Feb(2019), Vol-6, ISSUE-6

3. मालव, हेमंत, भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की भागीदारी यसंभावनाएँ और चुनौतिया, IJLRP, चेचत (कोटा), dec(2024), Vol-5, Issue-12

4. भारद्वाज, नीरज, वर्तमान परिवेश मे सोशल मीडिया का युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव : एक अध्ययन, IJCRT, बुंदेलखंड (झांसी), Nov (2021), Vol-9, Issue-11

5. नरुका, संतोष, सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव, IJCRT, लाडनू (नागौर), JAN(2018), Vol-6, ISSUE-1

6. डॉ. मीन, रामकल्याण ,सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव, IJHSSI, झालवाड़ा (राजस्थान), MARCH(2023),Vol-12, ISSUE-3

7. द्विवेदी, रश्मि, सोकैल मीडिया का समाज पर प्रभाव, रिव्यू आफ रिसर्च, छतरपुर (मध्य प्रदेश), August(2023),Vol-12, Issue-11

8. याध्या, चाजमीन, फातिमा, हसन, युवा मतदान व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव : एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा, IJRTSS, मेलाका (मलेशिया), Nov(2024)

9. https://dhunt.in/1268Ot

10. लोकनाथ, सामाजिक जागरूकता मे सोशल मीडिया की भूमिका, पत्रकारिता विभाग महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, 2017